गरिमा का मूल्यः

कहानी **आर्थर ऐश** की

लेखनः एन डॉनगन जॉनसन

चित्रः पिल्लेजी

भाषान्तरः पूर्वा याज्ञिक कुशवाहा

गरिमा का मूल्यः
कहानी **आर्थर ऐश** की

लेखनः एन डॉनगन जॉनसन

चित्रः पिल्लेजी

भाषान्तरः पूर्वा याज्ञिक कुशवाहा

यह कहानी चैम्पियनशिप टैनिस खिलाड़ी, लेखक, व नागरिक अधिकारों के सक्रियकर्मी **आर्थर रॉबर्ट ऐश** की है। यह क़िताब उनके जीवन की घटनाओं पर आधारित है। आर्थर ऐश के जीवन की अन्य ऐतिहासिक जानकारियाँ क़िताब के आख़िरी पन्ने पर दी गई हैं।

एक समय की बात है . . .

बहुत पुरानी भी नहीं, 10 जुलाई 1943 के दिन आर्थर रॉबर्ट ऐश का जन्म रिचमंड, वर्जीनिया में हुआ। वे आर्थर ऐश, सीनियर तथा मैटी कॉरडैल कनिंगघम ऐश के पहले बेटे थे। आर्थर एक बड़े व स्नेहिल परिवार का हिस्सा थे जिनके पूर्वजों को अफ्रीका से गुलाम बना संयुक्त राज्य अमरीका लाया गया था।

उस वक़्त वर्जीनिया एक सेगरिगेटेड (पृथकीकृत) राज्य था, जिसका मतलब था कि तब वहाँ गोरे और काले एक मुहल्ले में नहीं रहते थे, न उनके बच्चे एक स्कूल में पढ़ते थे, न लोग एक ही तरह का काम करते थे। अफ्रीकी-अमरीकियों के लिए यह मुश्किल समय था, पर आर्थर का परिवार इन पूर्वाग्रहों व्यक्तिगत नहीं मानता था। अपने सामने आने वाली अन्यायपूर्ण बाधाओं के बावजूद परिवार अपने आत्म-सम्मान और गरिमा को बनाए रखता था। पिता ने गरिमा के का यह पाठ को आर्थर को भी पढ़ाया, जो आर्थर के साथ आजीवन बना रहा ..।

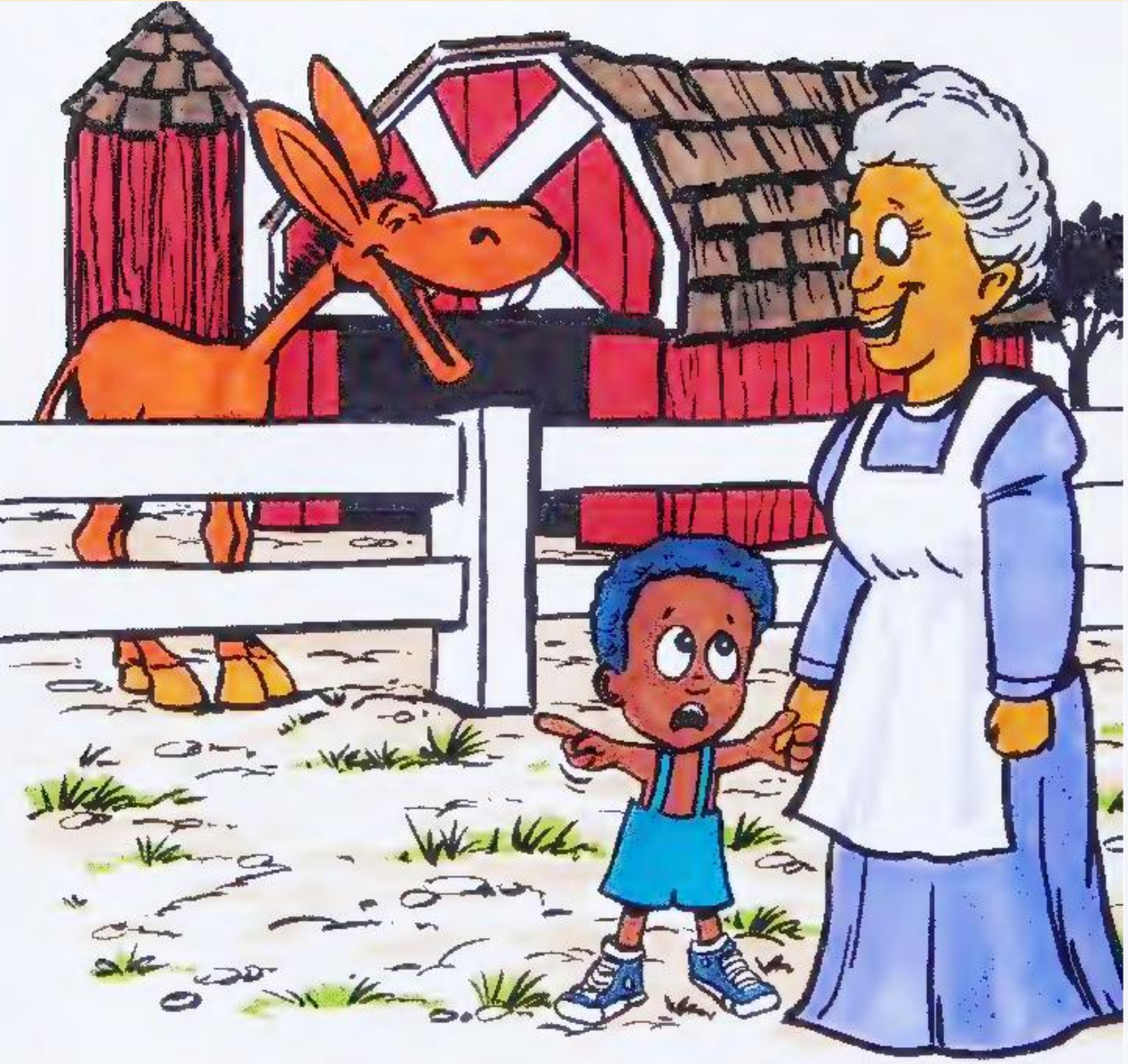

नन्हा आर्थर अपनी दादी व नानी से बेहद प्यार करता था। उसकी दादी एमेलिया ऐश जॉनसन को समूचा परिवार 'मा' कह संबोधित करता था। हालांकि 'मा' ने जीवन में तमाम कठिनाइयाँ झेलीं, उन्होंने अपनी गरिमा कभी नहीं खोई। वे अपनी ज़िन्दगी से, नाती-पोतों से प्यार करती थीं। बचपन में अपनी गर्मियाँ आर्थर उनके बड़े-से खेतघर में बिताया करता था। उसे याद था कि वहीं पहली बार एक खच्चर को देख वह डर गया था।

आर्थर की नानी 'बड़ी मामा' कनिंगघम कहलाती थीं। जब नाना की मृत्यु हो गई बड़ी मामा ने अपने दस बच्चों को अकेले ही पाला-पोसा। उनकी गरिमा और ईश्वर में उनकी आस्था ने उन्हें इस कठिन दौर को पार करने में उनकी मदद की।

आर्थर बचपन में अपनी बड़ी मामा, परिवार के अन्य सदस्यों और दोस्तों के साथ कई गिरजों में जाया करता था। बाद में एक टैनिस खिलाड़ी के रूप आर्थर ने काफ़ी सफ़र किया और दूसरे धर्मों व संस्कृतियों के बारे में जानने की कोशिश की। अंततः आर्थर ने निष्कर्ष निकाला कि सभी धर्म एक ही स्वर्णिम सीख देते हैं - दूसरों के साथ ठीक वैसा बरताव करो जैसा तुम चाहते हो कि वे तुमसे करें। इन्सान के रूप में उनकी गरिमा का सम्मान करो।

बचपन में आर्थर एक बीमार बच्चा था। वह अपनी माँ जैसा शर्मीला भी था। जब उसका छोटा भाई दूसरे लड़कों के साथ चीखता-चिल्लाता फिरता था, आर्थर अक्सर चुप बैठ क़िताबें देखा करता था।

आर्थर की सातवीं सालगिरह के कुछ ही समय बाद उसकी माँ की मौत हो गई। वे केवल 27 बरस की थीं। उनकी इस अकाल मृत्यु के कारणों में एक दिल का रोग भी था।

आर्थर ने तब अपने बिलखते पिता से कहा था, ''फ़िक्र न करो डैडी, जब तक हम एक-दूसरे के साथ हैं, हम ठीक ही रहेंगे।''

हालांकि आर्थर अपनी माँ से बेहद प्यार करता था, वह उनकी मौत पर बहुत रोया नहीं। वह अपने दुख को अपने तक समेटे रहा। आर्थर के जीवन भर लोग मानते रहे कि उसके इस विराग का मतलब था भवनाओं की कमी।

पर आर्थर भावुक था, हालांकि स्वभाव से संयमित और गरिमामय था। तब भी जब वो छोटा था।

जब आर्थर टैनिस खिलाड़ी बने, उनके कुछ प्रतिद्वंद्वी टैनिस कोर्ट में उनकी शान्त स्थिरता से डरते थे। कुछ तो यह तक मानते थे कि वे खेल को गंभीरता से नहीं लेते। पर आर्थर अपने प्रतिद्वंद्वियों को डराने के मकसद से शान्त होने का नाटक नहीं करते थे। टैनिस उनके लिए बड़ा मायने रखता था। पर जैसे वे अपने टैनिस रैकेट के बिना बिरले ही दिखाई देते, उसी तरह अपनी गरिमा भी हमेशा साथ रखते।

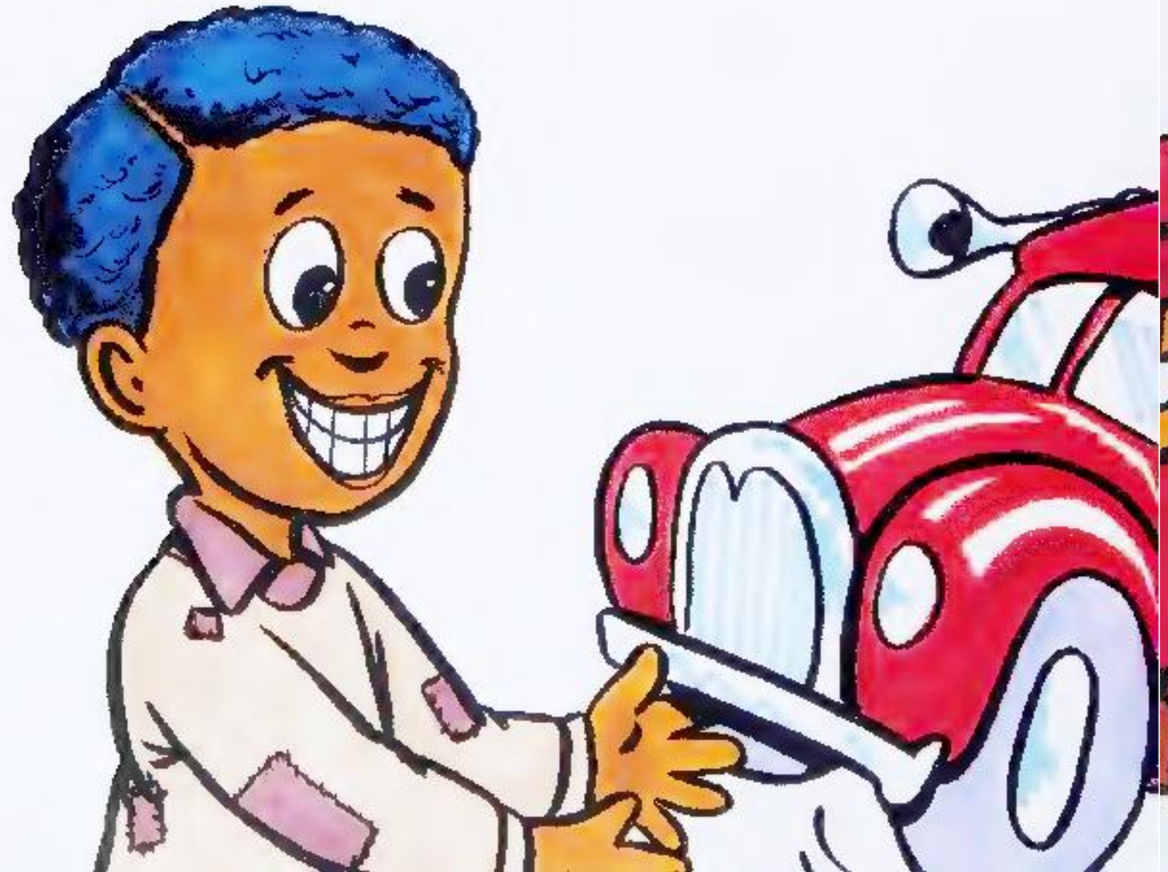

आर्थर के पिता ने अपने बेटों की देखभाल के लिए एक बुज़ुर्ग महिला को रखा। पर उन्होंने हमेशा ही माँ और पिता की भूमिका भी निभाई। आर्थर, सीनियर ने अपने बेटों को सही और गलत में अन्तर सिखाया और उसी आधार पर काम करना भी। वे मानते थे कि इन्सान की साख ही उसकी सबसे कीमती सम्पत्ति होती है। नन्हा आर्थर समझता था कि इस कथन से उसके पिता का मतलब यह नहीं था कि दूसरे हमारे बारे में क्या सोचते हैं। बल्कि उनका मतलब था कि इन्सान खुद अपने बारे में क्या सोचता था।

आर्थर, सीनियर ने अपने बेटों को दूसरों की मदद करने का महत्व भी समझाया-सिखाया। जब वे बड़े हो रहे थे वे हर क्रिसमस के दिन पिता के साथ जा ग़रीब परिवारों को खाना और खिलौने पहुँचाते थे। उन खिलौनों में कुछ तो वे हुआ करते थे जो उसी सुबह दोनों भाइयों को भेंट में मिले होते थे।

आर्थर के पिता विशेष पुलिस बल के कार्मिक थे। वे अतिरिक्त पैसे कमाने के लिए रिचमंड के अमीर लोगों के लिए केटरिंग, बागवानी, उनकी घास काटने और वेटर का काम भी किया करते थे।

आर्थर ऐश, सीनियर बमुश्किल बाइबल पढ़ पाते थे, पर कड़ी मेहनत करना वे जानते थे। वे जो कुछ भी करते उसे बखूबी करते - और यही उन्होंने अपने बेटों को भी सिखाया।

आर्थर सीनियर के अतिरिक्त कामों में एक था ब्रुकफील्ड के खेल मैदान के रख-रखाव की निगहबानी करना। यह बड़ा पार्क ऐश परिवार के घर के पास ही था। ब्रुक फील्ड में वर्जीनिया के चुनिंदा टैनिस कोर्टों में एक था जो कालों के लिए भी खुला था।

छोटे आर्थर, जूनियर को लोगों को टैनिस खेलते देखना पसन्द था। वह टैनिस कोर्ट के पास बैठ एक के बाद एक खेल देखा करता था। वह खिलाड़ियों को बॉल 'सर्व' करने का अभ्यास करते भी देखा करता था।

एक दिन रॉन चैरिटी ने, जो रिचमंड के एक बेहतरीन काले टैनिस खिलाड़ी थे, ग़ौर किया कि आर्थर उनके अभ्यास को देखता रहा है। उन्होंने अपना अभ्यास रोका और विस्फारित आँखों वाले उस नन्हे से पूछा, ''क्या तुम यह खेल सीखना चाहोगे?'' ''जी, बेशक,'' आर्थर ने जवाब दिया। उस पल से ही आर्थर की ज़िन्दगी हमेशा के लिए बदल गई।

अगले दो सालों तक रॉन चैरिटी ने आर्थर को टैनिस खेलना सिखाया। हालांकि रैकट उसके जितना ही बड़ा था जितना खुद आर्थर, वह लगातार अभ्यास करता, सिवा तब, जब वह स्कूल या चर्च में होता।

आर्थर अक्सर अपने से बड़े बच्चों के साथ खेलता था। पर उसे हारने पर फ़र्क नहीं पड़ता। वह हारने पर ना तो मुँह फुलाता, न रूठता। आर्थर जी-जान लगा कर अपना उम्दा खेल खेलता जाता - जब तक वह अपने खेल को इतना न सुधार ले कि वह अपने प्रतिद्वंद्वी को हरा सके।

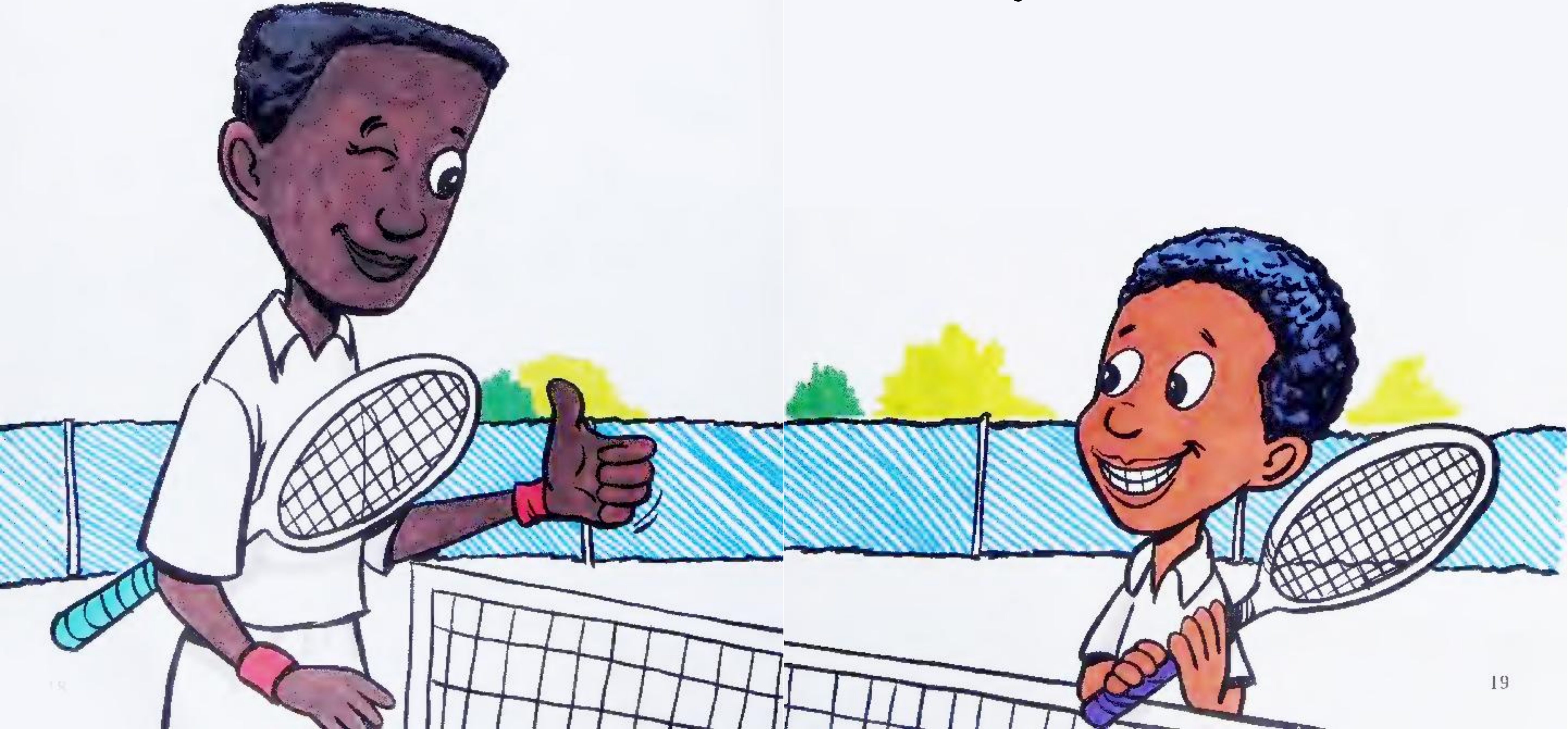

जब आर्थर बारह बरस को हो गया रॉन चैरिटी ने तय किया कि उनका छात्र शहर भर के खिलाड़ियों के बीच होने वाली टूर्नामेंट में हिस्सेदारी करने के लिए तैयार है। पर रिचमंड के टैनिस अधिकारियों ने आर्थर को हिस्सा नहीं लेने दिया, क्योंकि वह काला था।

रॉन चैरिटी एक ऐसे इन्सान को जानते थे, जो आर्थर की पेशेवर टैनिस खिलाड़ी बनने में मदद कर सकते थे। डॉ. आर. डब्ल्यू. जॉनसन एक काले चिकित्सक थे, जो लिंचबर्ग, वर्जीनिया में रहते थे। उन्होंने कई हुनरमन्द काले टैनिस खिलाड़ियों की मदद की थी, जिनमें एल्थीया गिब्सन भी शामिल थीं। गिब्सन पहली अफ्रीकी-अमरीकी महिला थीं जो महिलाओं की पेशेवर टैनिस में चैम्पियन बनी थीं।

डॉ जॉनसन काले खिलाड़ियों को उनके कौशल विकसित करने के ठीक वैसे मौके देना चाहते थे जो गोरे खिलाड़ियों को आसानी से मिलते थे। सो हर गर्मियों में वे चुनिंदा खिलाड़ियों के एक समूह के लिए अपना घर खोल देते। उन्हें ज़रूरी उपकरण उपलब्ध करवाते, और पास ही स्थित एक टैनिस कोर्ट में टैनिस सिखाते।

डॉ. जॉनसन एक बेहतरीन कोच थे, और एक ज़हीन इन्सान भी। वे अपने छात्रों को केवल टैनिस खेलना ही नहीं सिखाते थे, बल्की कालों के प्रति मौजूदा पूर्वाग्रहों के बावजूद जीतना भी सिखाते थे। डॉ. जॉनसन टैनिस के कई लाइन्समैन (अम्पायर) को जानते थे जो गेंद सीमा रेखा के बाहर होने के बावजूद काले खिलाड़ियों से कहते कि गेंद अन्दर थी। इसलिए डॉ. जॉनसन अपने छात्रों से कहते कि अगर प्रतिद्वंद्वी की गेंद सीमा के एक-दो इंच बाहर भी हो तो वे उसे ज़रूर पीटें। ऐसे में अगर लाइन्समैन झूठ भी कहता है तो भी वे पाइन्ट नहीं गंवाएंगे।

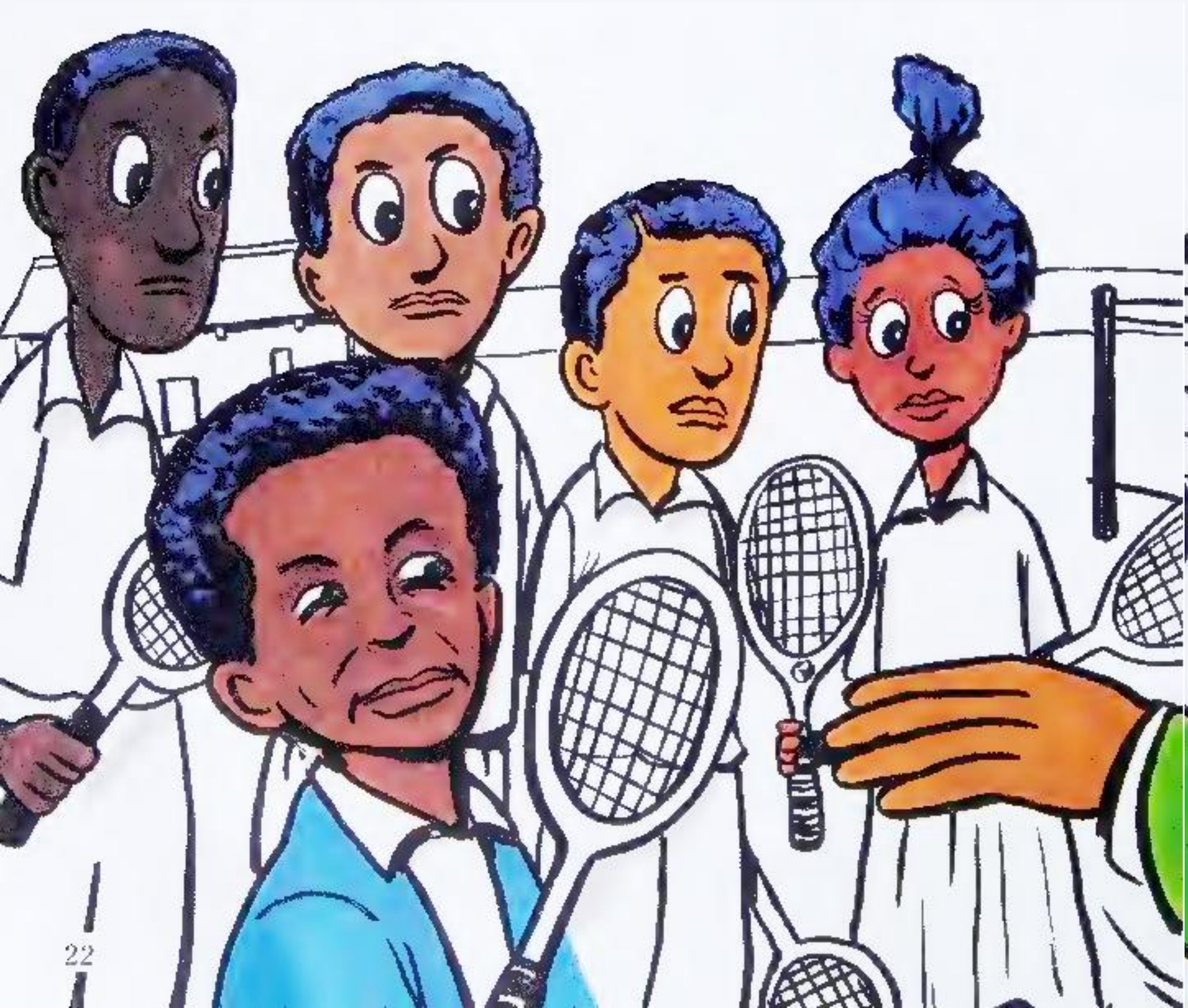

डॉ. जॉनसन अपने छात्रों को तमीज़दारी भी सिखाते थे। वे यह भी हिदायत देते कि किसी भी लाइन्समैन या प्रतिद्वंदी से बहस में नहीं उलझना चाहिए। वे खिलाड़ियों से कहते कि वे अपनी गलतियों को मुस्कान के साथ स्वीकार करें। वे अपने छात्रों से उम्मीद रखते कि वे टैनिस कोर्ट में और उसके बाहर भी शान्त और गरिमामय बने रहें।

आर्थर ने यह सब बखूबी सीखा। जब वह चौदह बरस का था डॉ. जॉनसन ने उसका नाम जूनियर राष्ट्रीय चैम्पियनशिप में लिखवाया। वह पंद्रह से कम आयु वर्ग की चैम्पियनशिप में सेमीफाइनल तक पहुँचा। हालांकि आर्थर जीता तो नहीं, पर उसने बड़ी ही कुशलता और सुघडता से खेला।

दो वर्ष बाद, आर्थर ने इन्डोर जूनियर टैनिस एकल का ख़िताब जीता। बावजूद कई स्थानीय अधिकारियों के, जिन्होंने उसे गोरे खिलाड़ियों से स्पर्धा करने से रोकने की कोशिश की थी। आर्थर अब अपने पथ पर बढ़ चला था।

अगले वर्ष, 1961 में आर्थर फिर से जूनियर इनडोर एकल का ख़िताब जीत सका। सेंट लूइस, मिसूरी के टैनिस अधिकारी रिचर्ड हुडलिन ने आर्थर को खेलते देखा और उससे प्रभावित हुए। मिस्टर हुडलिन ने आर्थर को हाई स्कूल के आख़िरी वर्ष के लिए सेंट लूइस आने का आमंत्रण दिया ताकि वे उसे प्रशिक्षण दे सकें।

इसका मतलब था अपने सभी परिचित लोगों को छोड़ एक अनजान जगह जाना। पर किशोर आर्थर ने आसानी से इसे स्वीकारा। वह तय कर चुका था कि तमाम अड़चनों के बावजूद टैनिस को ही अपना पेशा बनाएगा। जैसा आर्थर के पिता ने उसे सिखाया था, वह कड़ी मेहनत करने को तैयार था।

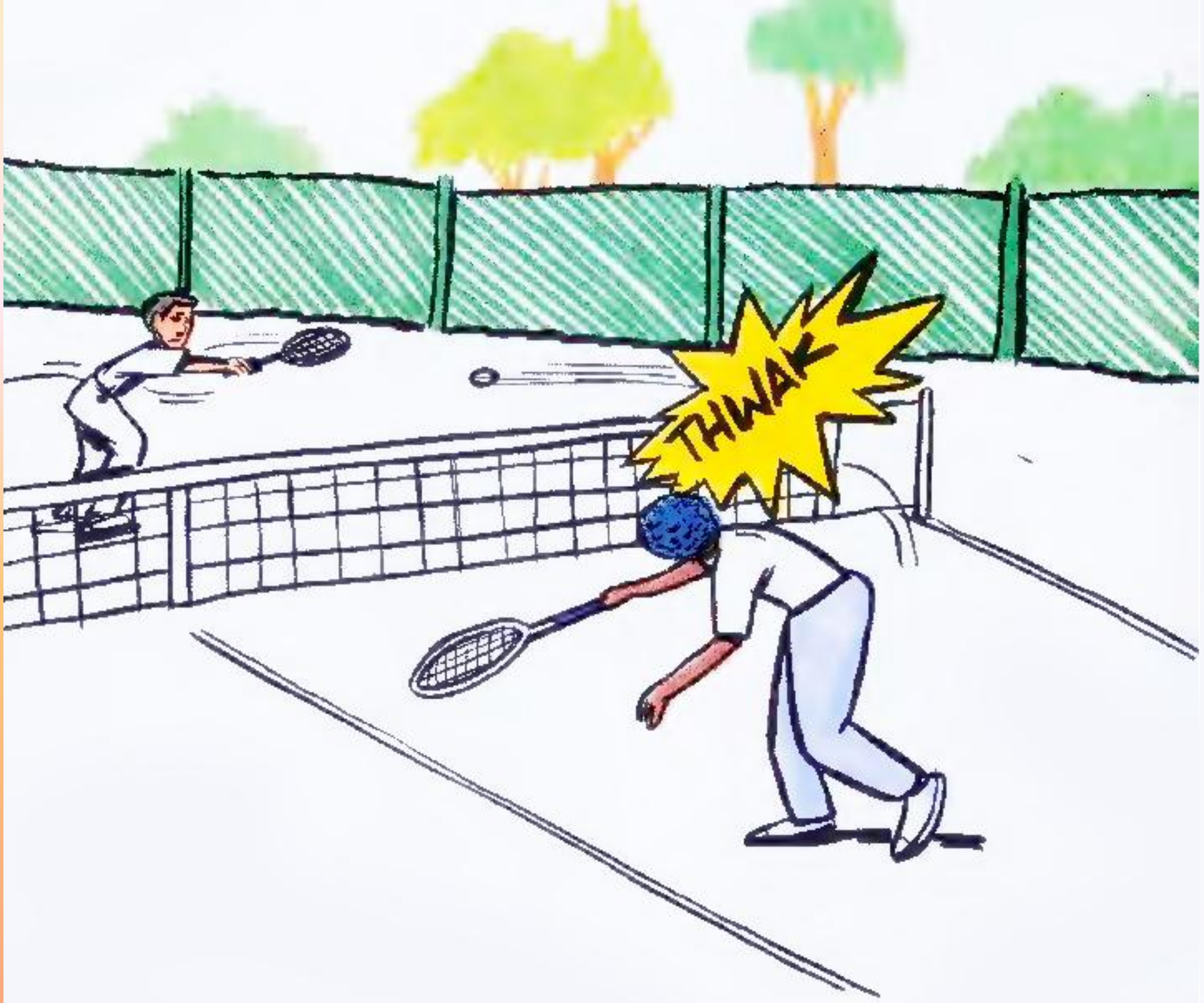

आर्थर साल भर हुडलिन परिवार के साथ रहा। रिचमंड की तरह सेंट लूइस में भी आर्थर काले बच्चों के पृथक स्कूल में पढ़ा, पर कई गोरे टैनिस खिलाड़ियों के साथ टैनिस खेलता रहा। उनमें से कुछ उसके दोस्त भी बन गए।

इसके बावजूद आर्थर को टैनिस क्लबों से बाहर रखा गया। एक बार तो उसे पृथक टैनिस कोर्ट से भगाया तक गया।

आर्थर ऐसे आचरण के बावजूद कड़वाहट और निराशा से नहीं घिरा। दूसरों का बरताव उसकी आन्तरिक शक्ति को नष्ट नहीं कर सका। उसने कालों के प्रति पूर्वाग्रहों को हताश नहीं करने दिया, न अपने सपने को हासिल करने से रोकने दिया। आर्थर ने हिम्मत नहीं हारी और लगातार मेहनत करता रहा।

1963 तक आर्थर अमरीका के जूनियर स्तर का पाँचवा खिलाड़ी बन चुका था। उसने औसत 'ए' अंकों के साथ अपनी स्कूली पढ़ाई पूरी की और लॉस एंजलिस के कैलीफोर्निया विश्वविद्यालय की टैनिस छात्रवृत्ति स्वीकारी।

विश्वविद्यालय के नियमित प्रशिक्षण के अलावा आर्थर को पाँचो गॉन्जैलस् ने भी प्रशिक्षित किया, जो विश्वविद्यालय परिसर के पास ही रहने वाले चैम्पियन टैनिस खिलाड़ी थे। आर्थर के लिए गॉन्जैलस् एक बेहतरीन मिसाल थे। वे न केवल उम्दा टैनिस खिलाड़ी थे बल्की उन्होंने अपने शानदार खेल से पूर्वाग्रहों को भी पछाड़ा था। गॉन्जैलस् उन गिनती के मैक्सिकी-अमरीकी खिलाड़ियों में एक थे जो पेशेवर टैनिस खेलते थे।

आर्थर को अब विश्वास हो चला था कि मेहनत और गरिमा के बूते कोई बाहर से आया व्यक्ति भी किसी भी खेल में सफल हो सकता था।

1963 में आर्थर ऐश लिए मानो समूची दुनिया खुल गई। इस वर्ष वे पहली बार विदेश गए और इंग्लैण्ड में विम्बलडन टूर्नामेंट में हिस्सा लिया। आर्थर को ब्रिटेन पसन्द आया और इस सफ़र ने उन्हें दूसरी संस्कृतियों के बारे में जानने-सीखने का मौका भी दिया।

इसी वर्ष आर्थर ने अमरीकी हार्डकोर्ट पुरुषों की एकल चैम्पियनशिप जीती और उन्हें डेविस कप चैम्पियनशिप मे खेलने के लिए आमंत्रित किया गया। वे पहले अफ्रीकी-अमरीकी थे जो अमरीका की टीम के लिए खेले। अपने देश के लिए खेलने पर आर्थर को बड़ा फ़क्र हुआ। मैच जीतने के पहले ही आर्थर उन पूर्वाग्रहों को हरा सके थे जिन्होंने उन्हें टैनिस को पेशा बनाने से रोकने की कोशिश की थी।

अगले दो वर्षों में आर्थर अमरीका के दूसरे नम्बर के टैनिस खिलाड़ी बन गए।

1966 में कॉलेज टैनिस खिलाड़ी के रूप में आर्थर का करियर ज़बरदस्त जीत के साथ समाप्त हुआ। उन्होंने नैशनल कॉलिजिएट एथलैटिक एसोसिएशन के एकल व युगल, दोनों ही ख़िताब जीते। साथ ही उन्होंने व्यावसायिक प्रबंधन में बीएस की डिग्री, बी माइनस के औसत के साथ पाई।

स्नातक बनने के बाद आर्थर ने छह सप्ताह सेना के आरक्षित अधिकारी प्रशिक्षण बल में बिताए। उन्हें अपनी प्लैटून (टुकड़ी) में समग्र उपलब्धि में द्वितीय आँका गया।

प्रशिक्षण के बाद दो वर्षों की सक्रिय सेवा के दौरान आर्थर ने प्रथम लैफ्टिनैन्ट का पद हासिल किया। अपने पिता की ही तरह आर्थर एक साथ कई कार्यों को बखूबी कर पाए। वे सेना व टैनिस, दोनों ही पेशों को सफलता से निभा सके।

1968 में आर्थर ने टैनिस की ग़ैर-पेशेवर श्रेणी का ख़िताब जीता। फॉरेस्ट हिल, न्यू यॉर्क में आयोजित इस राष्ट्रीय पुरुष एकल चैम्पियनशिप को जीतने वाले वे पहले अफ्रीकी-अमरीकी खिलाड़ी थे। इसके साथ आर्थर ऐश विश्व के अव्वल नम्बर के खिलाड़ी बन गए!

इतनी ऊँचाई हासिल कर लेने के बावजूद आर्थर को आगे भी पूर्वाग्रहों का सामना करना पड़ा, जिनसे वे पूरी गरिमा के साथ निपटे।

एक बार आर्थर के ख़िलाफ़ कई अन्यायी फ़ैसलों के बाद एक दर्शक ने इसके विरोध में आवाज़ उठाई। पर आर्थर ने धीरे से दर्शक को बरजते हुए अपना सिर हिलाया और आँख मारी।

दर्शक समझ गया कि आर्थर नहीं चाहते कि वह हल्ला करे। आर्थर इस अन्याय से अपनी तरह से निपटना चाहते थे। वे अपनी गरिमा बनाए रखना चाहते थे। वे यह जताना तक नहीं चाहते थे इस ग़लत फैसले ने उन्हें प्रभावित किया है। लाइन्समैन के तमाम फ़ैसलों के बावजूद आर्थर यह मैच जीते।!

1968 में आर्थर ने दक्षिण अफ्रीका में काले खिलाड़ियों के प्रतिपूर्वाग्रह को सीधे झेला। उस वर्ष दक्षिण अफ्रीका अपनी पहली टूर्नामेंट की मेज़बानी कर रहा था। उनके एक दक्षिण अफ्रीकी साथी ने दुख जताया कि आर्थर को उसमें शिरकत नहीं करने दी जाएगी।

आर्थर ने दक्षिण अफ्रीका के नस्लवाद के बारे में सुन रखा था, पर वे यह नहीं जानते थे कि वहाँ स्थिति किस कदर बदहाल थी। दक्षिण अफ्रीका की नस्लवादी नीति को 'अपार्थाइड' कहा जाता था। इसके नीति के तहत कालों और गोरों को पृथक रखा जाता था। वहाँ का कानून कहता था कि गोरे और काले अलग-अलग जीवन जिएं। कालों को अपने ही देश में मत देने तक का अधिकार नहीं था।

आर्थर ने तय किया कि वे इस नीति के बारे में खुद जानेंगे। उन्होंने दक्षिण अफ्रीका के वीज़ा के लिए आवेदन दिया ताकि वे प्रस्तावित टूर्नामेंट में खेल सकें। 1969 में उनका आवेदन खारिज कर दिया गया, क्योंकि किसी भी काले व्यक्ति को दक्षिण् अफ्रीका में घुसने की इजाज़त ही नहीं थी। आर्थर ने 1970 में फिर से वीज़ा पाने की कोशिश की।

आर्थर ने अपार्थाइड के ख़िलाफ आवाज़ उठाई। अंशतः आर्थर के शान्त व गरिमापूर्ण विरोध के कारण दक्षिण अफ्रीका को 1970 की डेविस कप प्रतिस्पर्धा से बाहर रखा गया।

अंततः 1973 में आर्थर को दक्षिण अफ्रीका में टैनिस खेलने की इजाज़त दी गई। हालांकि वहाँ काले और गोरे दर्शक अलग-अलग जगहों पर बैठा करते थे, आर्थर ने आग्रह किया कि उनके मैचों के दौरान दर्शक अपनी इच्छा से जहाँ चाहे बैठ सकें। फिर चाहे उनका रंग कुछ भी क्यों न हो।

आर्थर ने दक्षिण अफ्रीका में कालों की स्थिति को भयावह पाया। वहाँ की स्थिति उनके बचपन के पृथक वर्जीनिया से कहीं बदतर थी।

इसके बावजूद आर्थर अगले साल फिर से टैनिस खेलने दक्षिण अफ्रीका लौटे। कुछ अफ्रीकी-अमरीकियों को लगा कि आर्थर दक्षिण अफ्रीका जा कर ग़लती कर रहे हैं। पर आर्थर का मानना था कि वे वहाँ अच्छा खेल कर और गरिमापूर्ण बरताव कर कुछ बेहद महत्वपूर्ण कर रहे हैं।

1974 की टूर्नामेंट के दौरान आर्थर को इस बात से अचरज हुआ कि एक दक्षिण अफ्रीकी किशोर हर जगह उनका पीछा करता है। जब भी आर्थर मुड़ कर देखते, वह लड़का उन्हें नज़र आता।

आख़िरकार आर्थर ने उससे पूछ ही लिया, "तुम मेरा पीछा क्यों कर रहे हो?"

चैदह वर्षीय मार्क माथाबाने ने जवाब दिया, "क्योंकि आप पहले हैं जिसे मैंने देखा है।"

"पहला क्या?" आर्थर ने जानना चाहा।

"पहला सचमें आज़ाद काला इन्सान, जिसे मैंने कभी देखा है," मार्क ने साफ़ किया।

उसके कथन ने आर्थर को भावुक कर दिया।

आर्थर ऐश को अपनी गरिमा के सिवा कुछ भी खोने का डर नहीं लगता था। सभी खेल संवाददाताओं को पक्का भरोसा था कि आर्थर 1975 में जिमी कॉनर्स से हारेंगे। पर आर्थर ने अपना बेहतरीन खेल खेला। वे हमेशा की तरह शान्त और आत्म विश्वास से भरे थे।

हालांकि वे हारने पर भी अपनी शान्त गरिमा को बनाए रखते . . . वे जीते। ऐश ने अजेय जिमी कॉनर्स को हराया और विम्बलडन जीतने वाले पहले काले खिलाड़ी बने।

उसी वर्ष आर्थर ने विश्व टैनिस की एकल चैम्पियनशिप जीती और एसोसिएशन ऑफ टैनिस प्रोफेशनल्स ने उन्हें उस वर्ष का श्रेष्ठतम खिलाड़ी घोषित किया।

टैनिस के श्रेत्र में वे कितना ही ऊपर क्यों न उठ चुके हों, आर्थर ऐश नस्लवाद से कभी बच न सके। इसके बावजूद उनकी गरिमामय प्रतिक्रिया ने कई लोगों को अफ्रीकी-अमरीकियों के प्रति पूर्वाग्रहों और अन्यायपूर्ण आचरण पर फिर से सोचने-विचारने को प्ररित किया।

टैनिस के उम्दा खिलाड़ी ईली नाश्तासे अपने प्रतिदवंददियों का खेल गड़बड़ाने के मकसद से उन पर तानाक़शी किया करते थे। स्वीडन की 1975 की मास्टर्स टूर्नामेंट में उन्होंने आर्थर पर असहनीय नस्ली छींटाकशी की। उनके स्तर तक नीचे उतरने के बदले आर्थर चुपचाप कोर्ट से बाहर निकल गए। उन्होंने अपनी गरिमा बनाए रखी।

उस दिन बाद में निगहबानी समिति ने आर्थर को मैच में विजयी माना। टूर्नामेंट ख़त्म होने के बाद नाश्तासे ने आर्थर से माफ़ी मांगी और उन्हें गुलाबों का एक गुलदस्ता भेंट किया।

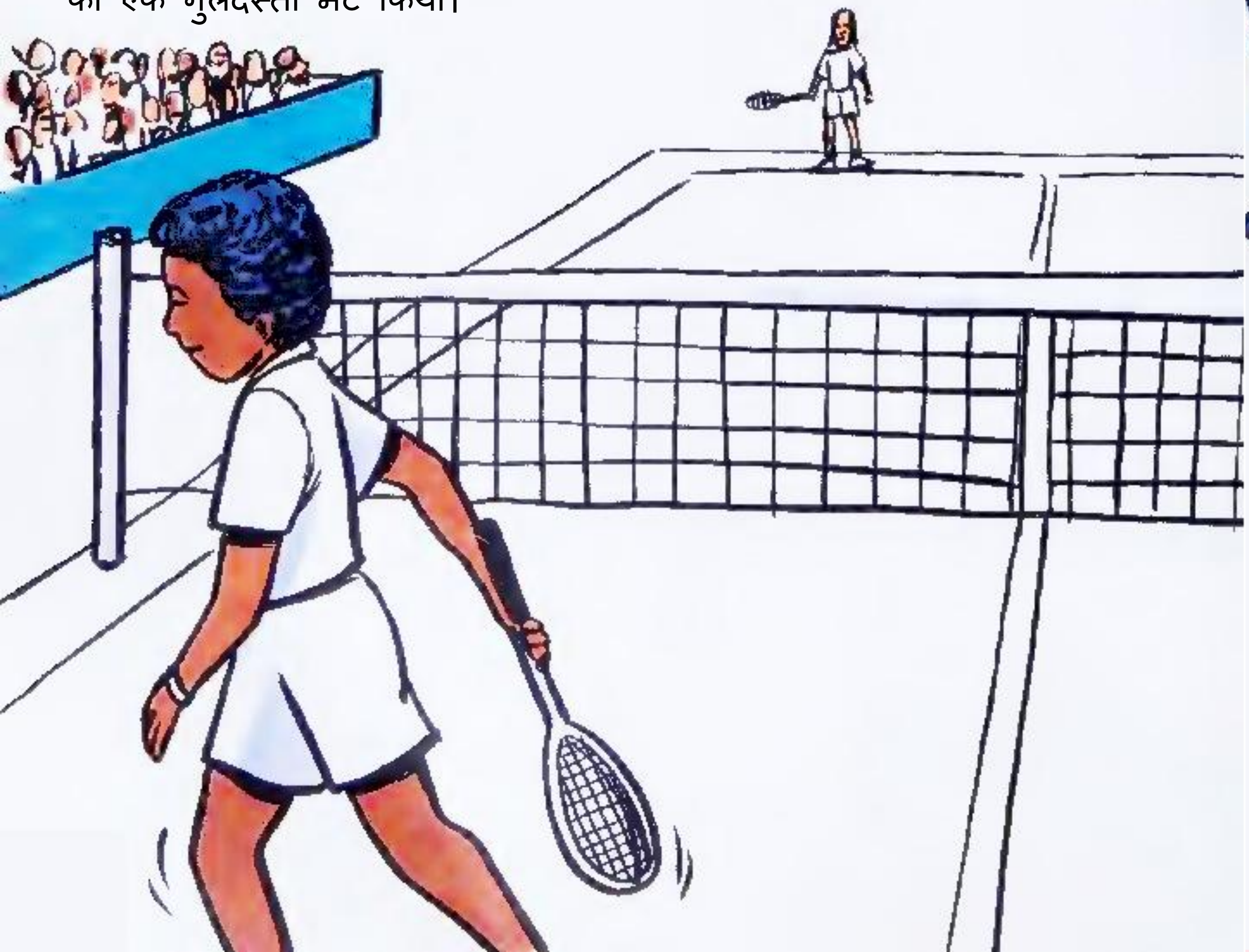

1976 में आर्थर युनाइटेड नीग्रो कॉलेज फंड के एक आयोजन में गए। जीन-मारी माउतुसामी न्यू यॉर्क की एनबीसी टीवी की फोटोग्राफर थीं। उन्होंने कई मशहूर हस्तियों की तस्वीरें खींचीं, पर एक के साथ उन्हें प्रेम हो गया - यह व्यक्ति था आर्थर ऐश।

चार महीनों बाद 20 फरवरी 1977 में आर्थर व जीन का विवाह हुआ। आर्थर बैसाखी का सहारा लिए थे, क्योंकि एड़ी की चोट के कारण उनका ऑपरेशन हुआ था। वे अपनी खूबसूरत संगिनी जीन के साथ लंगड़ा कर चलते हुए भी बेहद खुश थे।

जीन के साथ अपनी नई ज़िन्दगी आरंभ करने के साथ ही पेशेवर टैनिस खिलाड़ी के रूप में आर्थर का पूर्व जीवन खत्म हो रहा था। सबसे सफल खिलाड़ी भी यह जानते हैं कि किसी न किसी दिन उन्हें जवान खिलाड़ियों के सामने हटना पड़ेगा। फिर भी आर्थर पेशेवर टैनिस से जुड़े रहना चाहते थे। हालांकि इसका मतलब था कई हारों को स्वीकारना। पर जुलाई 1979 में आर्थर को दिल का दौरा पड़ा।

अब उनके सामने विकल्प यह थे कि वे या तो अपनी गतिविधियों को सीमित करें और ऐसा जीवन जिएं जिसमें टैनिस न हो, या फिर बायपास सर्जरी करवाएं। दिसम्बर में आर्थर ने दिल की चार धमनियों का बायपास करवाना चुना।

सर्जरी सफल रही। उस मार्च आर्थर और जीन छुट्टियाँ मनाने मिस्त्र गए। वहाँ वे पिरामिडों के पास एक होटल में ठहरे। आर्थर ने साचा था कि कुछ सप्ताह के आराम के बाद वे टैनिस खेलने लौट सकेंगे। एक सुबह वे थोड़ी दूर दौड़ने गए ही थे कि उन्हें अचानक छाती में दर्द महसूस हुआ।

आर्थर को अहसास हो गया कि पेशेवर टैनिस खिलाड़ी के रूप खेल पाने के दिन लद चुके हैं। उन्होंने इस बदलाव को भी सौम्यता के साथ स्वीकारा। उन्होंने पेशेवर टैनिस से सेवा निवृत्त होने की बात प्रेस से साझा की। तब तीन महीनों तक यह विचार किया कि आगे क्या करना है।

किस्मत से आर्थर की रुचि टैनिस के अलावा अन्य चीज़ों में भी थी। उन्हें गॉल्फ, संगीत और खास तौर से पढ़ना भी पसन्द था। वे विख्यात लोगों की जीवनियों व बाइबल के अलावा अर्थशास्त्र, भूगोल, मानवशास्त्र और अंतर्राष्ट्रीय मामलों पर क़िताबें पढ़ा करते थे।

37 वर्ष की आयु में आर्थर अपने कॉलेज के दिनों से कहीं अधिक पढ़ने लगे। उन्हें नई बातें जानना-सीखना अच्छा लगता था। वे यह उम्मीद भी रखते थे कि वे युवा काले खिलाड़ियों को सीखने के लिए प्रोत्साहित कर सकेंगे। वे उन कॉलेजों के ख़िलाफ़ भी बोलते थे जो खिलाड़ियों से पढ़ाई में योग्यता दर्शाने की शर्त के बिना ही छात्रवृत्तियाँ दे दिया करते थे।

1980 में आर्थर को अमरीकी डेविस कप टीम का कप्तान चुना गया। इस चयन ने उन्हें सम्मानित महसूस करवाया, पर जल्द ही पाया कि यह काम बेहद कठिन था।

उस वक़्त अमरीका के श्रेष्ठतम टैनिस खिलाड़ी थे जॉन मैकेनरो व जिमी कॉनर्स। वे अपने गरम-मिजाज़ के लिए मशहूर थे। वे उम्मीद करते थे कि आर्थर भी ऐसा ही बरताव करेंगे। पर आर्थर एक ऐसा कोच नहीं बनना चाहते थे जो अपने खिलाड़ी के विरुद्ध हरेक पॉइन्ट पर लाइन्समैन से लड़े-झगड़े। जब भी अमरीकी टीम के सदस्य अपने प्रतिद्वंद्वियों, टैनिस अधिकारियों या दर्शकों का अपमान करते आर्थर शर्मिन्दगी महसूस करते। उन्हें लोगों को डाँटना-डपटना नापसन्द था। आर्थर आचरण के मानक कायम रखते। कुछ लोगों को लगता था कि टैनिस खेलने आर्थर की विनम्र शैली पुराने ज़माने की है। पर आर्थर को लगता कि गरिमा और शिष्टता कभी पुरानी नहीं होती।

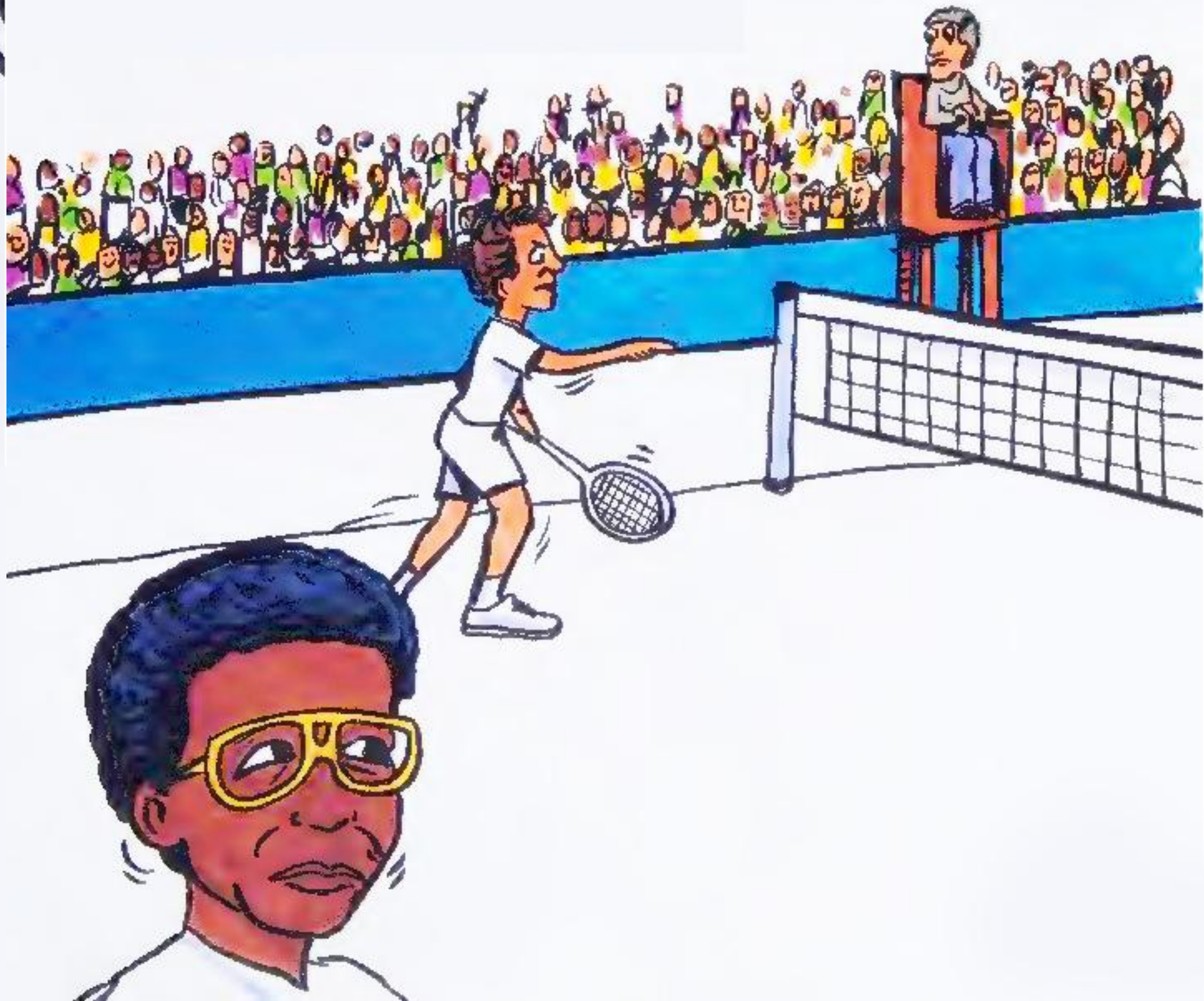

आर्थर ने 1980 से 1985 तक अमरीकी डेविस कप टीम को प्रशिक्षण दिया। इन पाँच वर्षों में टीम जीती भी और हारी भी। हालांकि जॉन मैकेनरो और आर्थर की शख्सियत में अन्तर था, वे एक-दूसरे का सम्मान भी करते थे। आर्थर इस सितारा खिलाड़ी को हमेशा सलाह नहीं देते थे, पर जब देते मैकेनरो हमेशा उस पर अमल करते।

1982 में एक लम्बे और कठिन मैच के दौरान मैकेनरो जूझ रहे थे, आर्थर ने इस गरम मिजाज़ खिलाड़ी को धीरज से अच्छे शॉट का इन्तज़ार करने को कहा। मैकनरो ने इन्तज़ार किया . . . और अंततः जीते! तब अपने कोच को खुशी से गले लगाया।

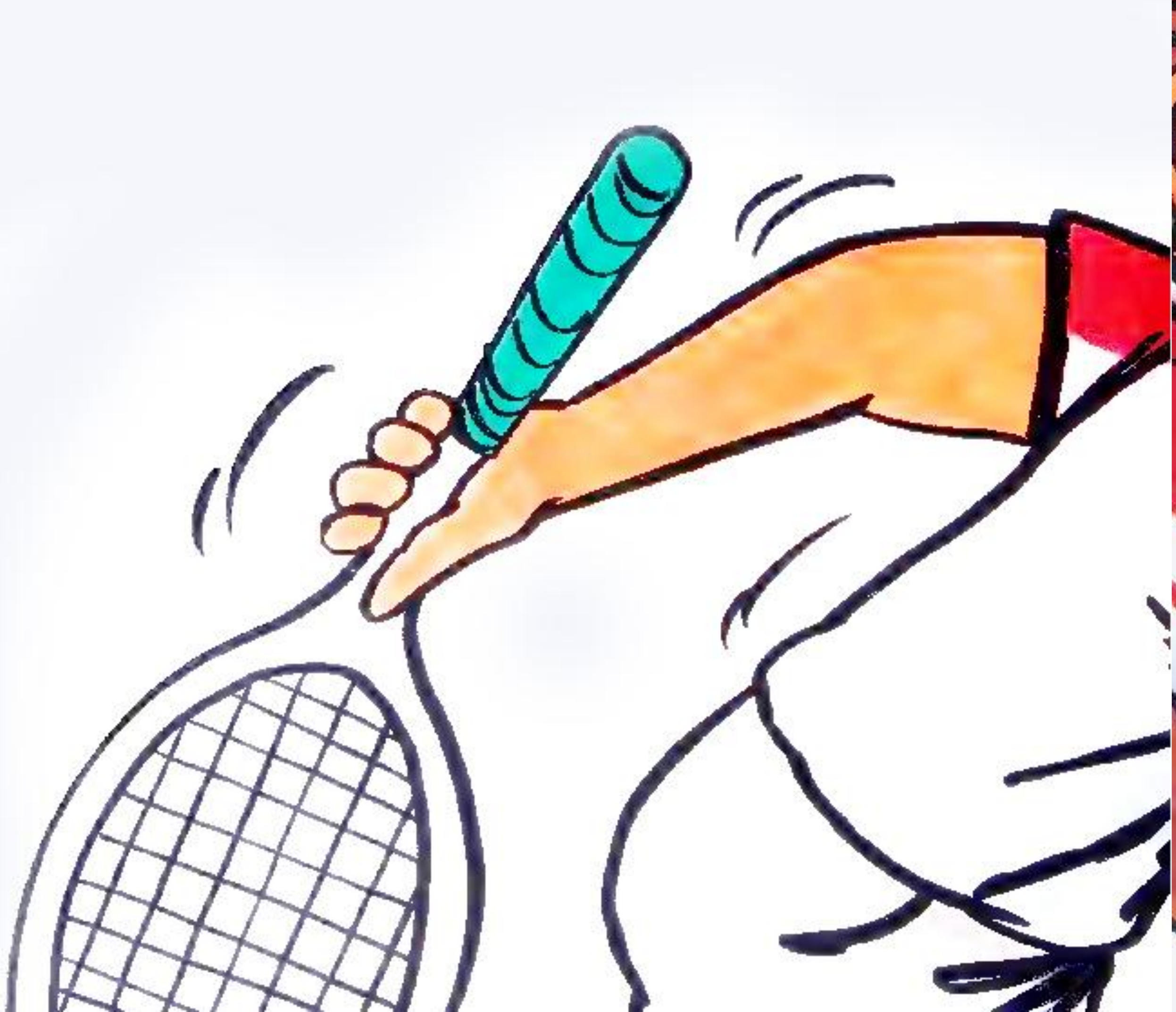

जून 1983 में आर्थर को एक और बायपास ऑपरेशन करवाना पड़ा। पिछली सर्जरी के घावों के कारण यह ऑपरेशन कठिन था। आर्थर बेहद कमज़ोर थे, सो उन्होंने जल्दी ठीक होने के लिए खून चढ़वाने पर हामी भरी।

इसी वर्ष कुछ समय बाद उन्होंने विख्यात येल विश्वविद्यालय में भाषण देने का मौका ठुकराया ताकि अपने एक मित्र द्वारा केवल कालों छात्रों के लिए संचालित फ्लॉरिडा मेमोरियल कॉलेज में एक सेमिनार कर सकें। आर्थर को लगता था कि उन्हें अफ्रीकी-अमरीकी छात्रों की हर-संभव मदद करनी चाहिए।

इस सेमिनार का विषय था ''समसामयिक समाज में काले एथलीट (खिलाड़ी)''। इस सेमिनार की तैयारी करते वक़्त आर्थर यह जान अचरज में पड़ गए कि इस विषय पर कितना कम लिखा गया है। कितने ही महान अफ्रीकी-अमरीकी खिलाड़ियों ने नाइन्साफी और अपमान झेलने के बावजूद सफलता पाई थी। पर उनकी कहानियाँ कहाँ थीं?

आर्थर ने अपने पैसों से शोधकर्ताओं का एक समूह बनाया ताकि इन गुमशुदा कहानियों को तलाशा जा सके। शोध समूह ने पुराने अख़बार छाने, सैकड़ों लोगों से साक्षात्कार किए, उनके दादा-नानाओं, पर-दादा और पर-नानाओं के बारे में तहकीक़ात की, लोगों की अटारियों की धूल खाई, ट्रोफियों को तलाशा, और पुराने फोटो एल्बमों से उन लोगों की तस्वीरें खोज निकालीं, जिन्होंने खेल-कूद में जीत हासिल की थी। जिन्होंने नस्लवाद को पछाड़ा था।

1988 में आर्थर अपनी रचना *अ हाई रोड टू ग्लोरीः द हिस्ट्री ऑफ द एफ्रिकन-अमेरिकन एथलीट* का लेखन पूरा किया। तीन खण्डों की यह रचना 1619 से 1985 की अवधि को समेटती है और इस विषय की सबसे प्रामाणिक रचना मानी जाती है। जिस तरह टैनिस कोर्ट में उनके समर्पण भाव ने नतीजा दिया था, ठीक उसी तरह आर्थर ऐश की मेहनत ने उन्हें एक विद्वान और लेखक के रूप में एक नई पहचान दी।

आर्थर कई वर्षों तक चुपचाप अपार्थाइड का विरोध करते रहे थे। उन्होंने जगह-जगह भाषण दिए, ट्रांसअफ्रीका जैसे संगठनों के लिए वित्त जुटाया।

1985 में आर्थर ने वॉशिंगटन डी.सी. में दक्षिण अफ्रीका के दूतावास के सामने अपार्थाइड के ख़िलाफ़ आयोजित जन-विरोध में शिरकत की। दूसरे लोगों की तरह आर्थर भी जानते थे कि उन्हें गिरफ्तार किया जाएगा। पर वे मानते थे कि इस विषय की अनदेखी नहीं की जानी चाहिए। आर्थर को हथकड़ियाँ पहनाई गईं, उन्हें थाने ले जाया गया और उनके विरुद्ध रपट दर्ज की गई। इस विरोध का इतना प्रचार हो चुका था कि इस कारण उन्हें डेविस कप के कप्तान पद से उन्हें हटा दिया गया। पर आर्थर ने इस बलिदान को भी सहजता से स्वीकारा। वे एक बेहतरीन टैनिस खिलाड़ी के अलावा कुछ और होना भी नहीं चाहते थे। आर्थर का मानना था कि इस विरोध ने उन्हें अपनी आस्था को जताने का एक मौका दिया है। सभी लोगों को आज़ादी और गरिमा का अधिकार है - फिर चाहे वे किसी भी नस्ल के क्यों न हों।

कई सालों तक आर्थर और जीन बच्चे होने को टालते रहे थे, क्योंकि उन्हें डर था कि कहीं उनकी सन्तान भी दिल के मरीज़ न हों। यह रोग आर्थर और जीन दोनों के ही परिवारों में आम था। पर अंततः उन्होंने तय किया कि वे यह जोखिम उठाएंगे।

21 दिसम्बर 1986 को आर्थर को क्रिसमस का एक अद्‌भुत अग्रिम तोहफ़ा मिला - उनकी नन्ही, कामेरा एलिज़ाबैथ ऐश का जन्म हुआ। उनके मित्र जो शान्त और गरिमामय आर्थर को देखने के आदी थे, उनके चेहरे पर चौड़ी मुस्कान देख चौंक गए।

अगले वर्षों में आर्थर ने पाया कि उन्हें पिता की भूमिका में आनन्द आता है। वे जो समय कामेरा के साथ नहीं बिताते, वह उन कामों में लगाते जिससे कामेरा और अन्य बच्चों के लिए एक बेहतर दुनिया बनाई जा सके।

अपने एक टैनिस प्रशिक्षक मित्र निक बोलोत्तिएरी के साथ मिल आर्थर ने ऐश-बोलोत्तिएरी सिटीस् (एबीसी) कार्यक्रम आरंभ किया। इस कार्यक्रम का उद्‌देश्य था शहरों के अन्दरूनी हिस्सों के ग़रीब बच्चों में टैनिस के ज़रिए आत्म-सम्मान जगाना और उन्हें यह सिखना कि वे कैसे बेहतर बन सकते हैं।

आर्थर जानते थे की एबीसी कार्यक्रम बच्चों को टैनिस के अलावा भी बहुत कुछ सिखाएगा - हारने के बाद फिर से उठना, कोशिश करते जाना, अपनी ऊर्जा को अपने लक्ष्य पर केन्द्रित करना, और सबसे ज़रूरी यह भी सिखाना था कि सपने कैसे देखे जाते हैं।

आर्थर का एक और संगठन था 'सेफ पैसेज फाउन्डेशन' जो किशोरों की ऐसे मदद करता था ताकि वे खुद में और समाज में अपना विश्वास न खो दें। अपने बचपन के पृथक वर्जीनिया और दक्षिण अफ्रीका के अपने अनुभवों के चलते आर्थर जानते थे कि हताशा ही इन्सान के आत्म-सम्मान और उसकी उपलब्धियों की सबसे बड़ी दुश्मन होती है। वे चाहते थे कि बड़े होते समय बच्चों को हर संभव मौके मिलें - अपने आत्म-मूल्य के सशक्त अहसास के साथ।

आर्थर जिन बच्चों व किशोरों से मिलते उन्हें कहते कि वे अपने लिए ऊँचे लक्ष्य तय करें। जब कोई छोटा लड़का माइकल जॉर्डन जैसा बास्केटबॉल खिलाड़ी बनने की इच्छा ज़ाहिर करता, आर्थर कहते "तो तुम उस टीम के मालिक ही क्यों नहीं बनते जिसका माइकल जॉर्डन सदस्य हो।

आर्थर ने एथलीटस् करियर कनैक्शन आयोजित किया ताकि कॉलेज स्तर के प्रतिभाशाली काले खिलाड़ियों की पढ़ाई में अच्छे अंक पाने में भी मदद करें। उन्हें प्रेरित करें कि वे जल्दी पैसा कमाने के बदले अपने पेशे के बारे में समग्रता से सोच सकें।

इन तमाम गतिविधियों के बीच आर्थर अचानक फिर से बीमार पड़े। जाँचों से पता चला कि उन्हें एडस् हो गया है। यह घातक रोग बीमारियों से लड़ पाने की शरीर की क्षमता को खत्म कर देता है। चिकित्सकों को समझ आया कि उन्हें यह रोग दूसरे बायपास के समय खून चढ़ाने के कारण हुआ था। आर्थर की दूसरी सर्जरी के दो वर्ष बाद से ही ब्लड बैंक खून चढ़ाने के पहले उसकी जाँच एडस् के संक्रमण के लिए करने लगे।

आर्थर और जीन ने तय किया कि वे इस बारे में किसीको कुछ नहीं बताएंगे। आर्थर सीनियर, दिल के मरीज़ थे, आर्थर और जीन को लगा कि बेटे की इस घातक बीमारी की बात सुन उन्हें भारी सदमा पहुँचेगा। साथ ही कामेरा यह सब समझ पाने के लिए बहुत छोटी थी। आर्थर ने अपनी पत्नी और बेटी के साथ ज़िन्दगी वैसे ही जीते जाने और उसका जितना आनन्द वे ले सकते थे, लेने का फ़ैसला किया।

पर आर्थर ने उन मसलों पर काम करना नहीं छोड़ा जो उनके दिल के क़रीब थे, जैसे दक्षिण अफ्रीका में अपार्थाइड का मुद्‌दा। नैल्सन मंडेला दक्षिण अफ्रीका के काले नेता थे, जिन्होंने अपार्थाइड से लड़ते हुए 27 वर्ष जेल में बिताए थे। वे मानते थे कि सरकार की नस्लवादी नीतियों की सज़ा देने का एक तरीका था दक्षिण अफ्रीका की खेल स्पर्धाओं का बहिष्कार करना।

सितम्बर 1989 में आर्थर ऐश ने मंडेला का सुझाव माना। उन्होंने अमरीका के एसोसिएशन ऑफ टैनिस प्रोफेशनल्स पर दबाव डाला कि अगले वर्ष दक्षिण अफ्रीका प्रस्तावित टैनिस टूर्नामेंट में शिरकत न की जाए। मार्क माथाबेन, जो पंद्रह साल पहले आर्थर का पीछा किया करता था, अब अमरीका में आ बसा था और कॉलेज शिक्षा पा लेखक बन चुका था। आर्थर और मार्क ने एसोसिएशन के प्रबंध मंडल के समक्ष मंडेला के तर्क प्रस्तुत किए।

1991 में आर्थर आख़िरी बार दक्षिण अफ्रीका गए। इस बार वे अफ्रीकी-अमरीकी शिष्ट मंडल के हिस्सा थे जिसे नैल्सन मंडेला ने आमंत्रित किया था। आर्थर मंडेला के मुरीद थे जिन्होंने गरिमा के साथ इतना लम्बा समय जेल में बिताया था। उन्हें इस बात पर भी फ़क्र था कि मंडेला को उनकी रची क़िताबें पसन्द आई थीं। गौरव और आज़ादी के पथों से मंडेला बखूबी परिचित भी तो थे।

दक्षिण अफ्रीका में आए बदलावों को देख आर्थर खुश हुए। कालों और गोरों को अलग-थलग रखने के सारे संकेत हटाए जा चुके थे। कालों के बरताव में फ़क्र का भाव भी साफ़ नज़र आता था। फिर भी उस देश और शेष दुनिया में सबको बराबरी का दर्जा देने का लक्ष्य अब भी दूर था।

1992 में आर्थर को पता चला कि एक अख़बार यह ख़बर छापने वाला है कि आर्थर को एड्स् है। आर्थर यह जान बेहद नाराज़ हुए। उन्हें लगा कि उनके परिवार और मित्रों को उनकी बीमारी की जानकारी कब दी जाए यह फ़ैसला करने का हक़ अख़बार को नहीं है। पर हमेशा की ही तरह उन्होंने अपनी भावनाओं को अपनी गरिमा पर हावी नहीं होने दिया।

सबसे पहले आर्थर और जीन ने कामेरा को आर्थर की बीमारी के बारे में बताया। इसके बाद अपने परिजनों और मित्रों को ताकि उन्हें यह सूचना टीवी से न मिले। तब आर्थर ने ख़बरनवीसों से भरे एक कमरे में खुद अपने रोग की घोषणा की। जब उन्होंने अपनी पाँच वर्षीय बेटी की बात की उनका गला रुंध गया। पर जनता के सामने अपने गरिमा बिखरने देने के बदले उन्होंने जीन से कहा कि वे घोषणा के शेष भाग पढ़ कर सुना दें।

पर आर्थर की नाराज़गी जल्द ही ठंडी भी पड़ गई। उन्हें लगा कि उनकी बीमारी को लेकर जो प्रचार हुआ था उसका फ़ायदा भी हो सकता है। उन्होंने अपनी ख्याति का उपयोग एड्स् संबंधी शोध और एड्स् के रोगियों के प्रति सहानुभूति व सम्मान जगाने के लिए किया।

दुनिया भर में फैल रहे एड्स् के खतरे के बारे में जागरूकता बढ़ाने के लिए आवश्यक धनराशि जुटाने के लिए आर्थर ने भाषण दिए। एड्स् से लड़ने के लिए उन्होंने आर्थर ऐश फाउन्डेशन की स्थापना की।

30 अगस्त 1992 को आर्थर ने फ्लशिंग मैडोस्, न्यू यॉर्क के राष्ट्रीय टैनिस केन्द्र में एक मैच का आयोजन किया। 10,000 से भी अधिक टैनिस प्रशंसक अपना समर्थन जताने और दान देने इकट्ठा हुए।

1 दिसम्बर 1992, विश्व एडस् दिवस पर आर्थर ने वह भाषण दिया, जिसे वे अपने जीवन का सबसे महत्वपूर्ण भाषण मानते थे। उन्होंने उस दिन संयुक्त राष्ट्र संघ को संबोधित कर विकसित देशों से कहा कि वे इस वैश्विक महामारी से लड़ने में ग़रीब देशों की मदद करें।

इसके दो दिन बाद ब्रुकलिन, न्यू यॉर्क में आर्थर ऐश इन्स्टिट्यूट फॉर अर्बन हैल्थ खुला। आर्थर इस क्लिनिक के प्रबंध मंडल के पहले अध्यक्ष थे जो शहरी बच्चों व वयस्कों की एडस् के साथ जीने मदद करने के लिए बनाया गया था।

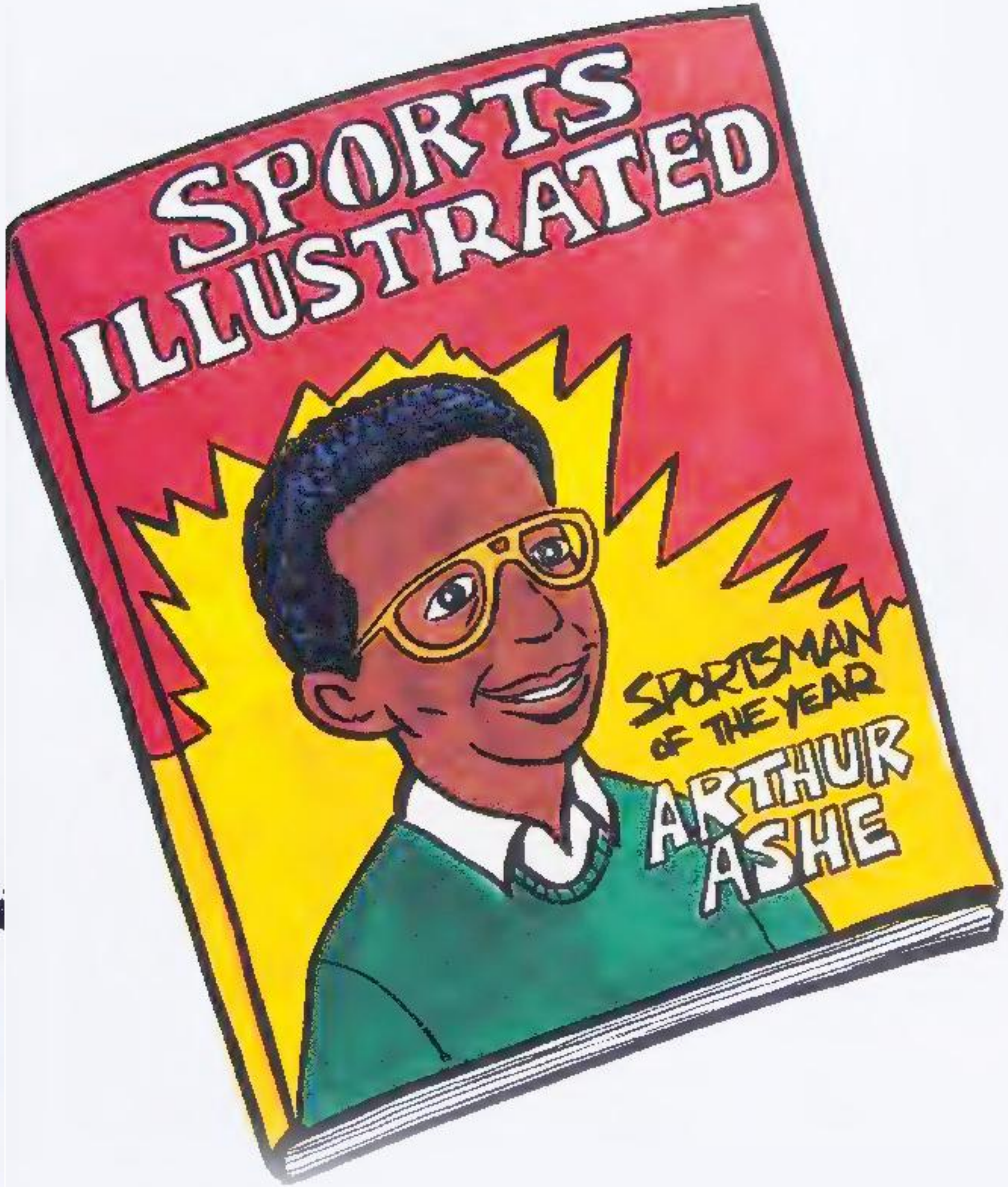

उसी माह स्पोर्टस् इलस्ट्रेटेड नामक पत्रिका ने आर्थर को उस वर्ष के श्रेष्ठतम खिलाड़ी के ख़िताब से नवाज़ा। पत्रिका ने न केवल टैनिस में उनकी विलक्षण उपलब्धियों का ज़िक्र किया, बल्की उनके अन्य योगदानों, उनकी शालीनता और अटल गरिमा का भी।

6 फरवरी 1993 को, 49 वर्ष की आयु में आर्थर की मृत्यु निमोनिया से हुई। यह रोगाणु एडस् के अनेक रोगियों की जान लेता है। वर्जीनिया भर में झंडे झुकाए गए। हालांकि आर्थर मुक्केबाज़ नहीं थे, उस दिन आयोजित मुक्केबाज़ी की चैम्पियनशिप में उनके सम्मान में दस बार घंटी बजाई गई। अंतर्राष्ट्रीय ओलम्पिक समिति ने आर्थर को अपना एथलीट सदस्य घोषित किया, हालांकि उन्होंने ओलम्पिक खेलों में कभी हिस्सा नहीं लिया था।

आर्थर टैनिस जगत में अपने सशक्त 'सर्व' के लिए मशहूर थे। पर उन्होंने अपनी गरिमा, सौम्यता और नस्लवाद के विरोध की मिसाल पेश करने के लिए और अधिक ख्याति पाई थी। राष्ट्रपति बिल क्लिंटन ने आर्थर को ". . . एक सच्चा अमरीकी नायक और हम सबके लिए एक अनुपम उदाहरण," कहा। आर्थर ऐश टैनिस कोर्ट में आरै उसके बाहर .... भी एक महानायक थे। उनकी मिसाल लोगों को प्रेरणा देती रहेगी।

आर्थर रॉबर्ट ऐश, जूनियर

(1943 - 1993)

आर्थर ऐश का जन्म 10 जुलाई 1943 में रिचमंड, वर्जीनिया में हुआ था। वे आर्थर रॉबर्ट ऐश, सीनियर और मेरी कॉर्डेल कनिंघम ऐश के पहले बेटे थे। आर्थर की सातवीं सालगिरह के कुछ ही समय बाद उनकी माँ चल बसीं। आर्थर के पिता ने एक बुज़ुर्ग सहाायिका की मदद से उन्हें और उनके छोटे भाई जॉनी का लालन-पालन किया। बाद में आर्थर, सीनियर ने लोरेन कैम्ब्रो से विवाह किया।

जब आर्थर सात वर्ष के थे उन्होंने रॉन चैरिटी से टैनिस खेलना सीखना शुरू किया। उन्होंने तब तक अभ्यास किया जब तक वे उस टैनिस कोर्ट में आने वाले अपने से बड़े लड़कों और वयस्कों तक को पछाड़ने न लगे। इस टैनिस कोर्ट में कालों को खेलने की इजाज़त थी।

12 वर्ष की उम्र में आर्थर एक नए कोच, डॉ. आर. डब्ल्यु. जॉनसन से टैनिस सीखने लगे। डॉ. जॉनसन अपने छात्रों को टैनिस के साथ तमीज़ भी सिखाते थे। आर्थर ने बड़ी आसानी से खेलने का तमीज़दार और टकरावहीन तरीका सीखा और अपना लिया।

1960 और 1961 में आर्थर ने इनडोर जूनियर पुरुष एकल जीता और अमरीका के जूनियर खिलाड़ियों में पाँचवाँ स्थान पा लिया। इस कारण उन्हें यूसीएलए की छात्रवृत्ति मिली। साल भर बाद ही आर्थर को अमरीका की डेविस कप टीम के लिए चुन लिया गया। वे पहले अफ्रीकी-अमरीकी थे जिन्हें देश के लिए खेलने का मौका मिला था। 1966 में एनसीएए द्वारा आयोजित एकल व युगल प्रतियोगिता जीत आर्थर ने कॉलेज स्तर के टैनिस का अपना सफ़र समाप्त किया।

1968 में आर्थर यूएस ओपन में गैर-पेशेवर श्रेणी का ख़िताब जीतने वाले पहले अफ्रीकी-अमरीकी खिलाड़ी बने। इसीके साथ उन्हें विश्व का अव्वल खिलाड़ी ठहराया गया।

1969 में आर्थर ने ग़ैर-पेशेवर टैनिस छोड़ा और अगले दस वर्षों तक पेशेवर टैनिस में निहायत सफल सिद्ध हुए। इस सफ़र के दौरान उन्होंने कई बार नस्ली पूर्वाग्रहों का सामना किया। चार वर्षों तक लगातार वीज़ा आवेदन ठुकराए जाने के बाद अंततः 1972 में उन्हें दक्षिण अफ्रीका में घुसने की इजाज़त मिली। उन्होंने उस देश के काले किशोरों को अपनी विजयों से प्रेरित किया। आगे आने वाले सालों में आर्थर ने दक्षिण अफ्रीकी सरकार की अपार्थाइड की नीति के ख़िलाफ़ आयोजित प्रदर्शनों में शिरकत की।

1977 में, 33 वर्ष की आयु में आर्थर ने जीन-मारी माउतुसामी से विवाह किया। इसके दो वर्षों बाद उनकी चार बाईपास सर्जरी हुई।

आर्थर को उम्मीद थी कि वे जल्द ही पेशेवर टैनिस खेलने लौट सकेंगे। पर खेलने लौटने के सप्ताह भर पहले उन्हें एन्जाइना (छाती में दर्द) का दौरा पड़ा। इसने उन्हें मार्च 1980 में पेशेवर टैनिस से सेवा निवृत्त होने पर मजबूर किया।

उसी साल आर्थर से अमरीकी डेविस कप टीम का कप्तान बनने की पेशकश की गई। 1982 में टीम ने जीत हासिल की, पर 1985 में आर्थर नई चुनौतियों की ओर बढ़े।

टैनिस के अलावा भी आर्थर की रुचियाँ थीं। 1983 में उन्होंने अपनी रचना *अ हाई रोड टू ग्लोरीः अ हिस्ट्री ऑफ द एफ्रिकन-अमेरिकन एथलीट* पर काम आरंभ किया। इसका प्रकाशन 1988 में हुआ। उन्होंने कई परोपकारी समूहों-संस्थाओं की स्थापना की और उनके लिए धन एकत्रित करने में मदद की।

1986 में आर्थर कामेरा एलिज़ाबैथ ऐश के पिता बने। इसके दो वर्ष बाद ही उन्हें पता चला कि उन्हें एडस् हो गया है। यह संक्रामक रोग उन्हें 1983 में हुए दूसरे ऑपरेशन के समय चढ़ाए ख़ून के कारण हुआ। आर्थर ने संकल्प किया कि वे जब तक संभव होगा अपनी परोपकारी और पेशेवर गतिविधियाँ जारी रखेंगे।

अप्रैल 1992 में एक ख़बरनवीस ने उनसे यह पुष्टि करने को कहा कि वे एडस् के मरीज़ हैं या नहीं। आर्थर को लगा कि बेहतर होगा कि वे खुद ही पत्रकारों को बुला कर इसका ऐलान करें। उनकी स्थिति जग-जाहिर होने के बाद आर्थर ने अपनी ख्याति का उपयोग एडस् के उपचार और शोध के लिए किया।

1992 में आर्थर को कई सम्मानों से नवाज़ा गया, जिनमें हैलन हेयस् पुरस्कार व वार्षिक राष्ट्रीय एडस् नेतृत्व पुरस्कार भी शामिल थे। स्पोर्टस् इलस्ट्रेटेड पत्रिका ने उन्हें उस वर्ष का सर्वश्रेष्ठ खिलाड़ी घोषित किया।

लेखक आर्नल्ड रामप्रेसाद के साथ आर्थर ने अपनी आत्मकथा *डेयस् ऑफ ग्रेस* का सह-लेखन किया। 6 फरवरी 1993 के दिन, 49 वर्ष की आयु में एडस् संबंधी निमोनिया के कारण आर्थर की मौत हुई। आर्थर ऐश गरिमा और सौम्यता की मिसाल थे। वे अपने परिवार, मित्रों व प्रशंसकों के दिल में हमेशा बसे रहेंगे।